प्रकाशन : केविके/एन.एच.आर./2023/05

बैकयार्ड मुर्गी पालन

2023 अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष INTERNATIONAL YEAR OF MILLETS MILLETS

डॉ. विक्रमजीत सिंह
विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशु विज्ञान)

डॉ. सुरेश चंद कांटवा
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष

डॉ. अशोक चौधरी
विषय वस्तु विशेषज्ञ (शस्य विज्ञान)

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

कृषि विज्ञान केन्द्र, (हनुमानगढ़-II) नोहर

भाकृअनुप ICAR

प्रसार शिक्षा निदेशालय

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

बैकयार्ड (घर के पिछवाड़े) मुर्गी पालन

घर के पिछवाड़े में छोटे स्तर पर मुर्गियों को घरेलू श्रम और स्थानीय उपलब्ध दाना–पानी का उपयोग करते हुए बिना किसी विशेष आर्थिक व्यय के पालन पोषण को बैकयार्ड कुक्कुट पालन कहते है। कुक्कुट पालन आर्थिक रूप से पिछड़े हुए लोगों को आर्थिक स्वावलंबन दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

बैकयार्ड कुक्कुट पालन

प्रायः दोहरे उपयोग वाली मुर्गियों का उपयोग बैकयार्ड कुक्कुट पालन के लिए किया जाता है। इसमे मुर्गियाँ घर की चारदीवारी के अंदर स्वतः विचरण करते हुए अपना खाना पीना खुद खोजती हैं। बैकयार्ड कुक्कुट को पालने के लिए किसी विशेष घर की आवाश्यकता नहीं होती है । मुर्गीयों को प्रायः बांस की टोकरी अथवा कार्ड बोर्ड के बक्से में रात को शिकारियो से बचाने के लिए रखा जाता है।

ये अधिकतर रसोई अपशिष्ट, टूटे हुए अनाज के दाने, कीड़े मकोड़ों आदि को खाकर जिंदा रहती हैं। इन्हे सिर्फ कुछ मात्रा अलग से बना हुआ दाना–पानी देने की आवश्यकता होती है। इन्हे अंडा देने के दिनों में अच्छी शैल की क्वालिटी के लिए शैल ग्रिट अथवा मार्बल के छोटे छोटे टुकड़े प्रतिदिन 5–7 ग्राम/पक्षी देना चाहिए।

बैकयार्ड कुक्कुट पालन के लाभ

- ❖ इसके लिए बहुत कम जमीन, श्रम एवं पूंजी की आवश्यकता होती है।
- ❖ यह गाँव के लोगों को फसल की बर्बादी या अन्य आपात स्थितियों में अतिरिक्त आय प्रदान कर जीने की सुरक्षा देता है।

- ❖ यह बच्चों एवं औरतों में प्रोटीन कुपोषण से मुक्ति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।
- ❖ यह अपशिष्ट पदार्थों जैसे रसोई अपशिष्ट, कीड़े मकोड़ो को उच्च प्रोटीन वाले अंडे एवं मांस में बदलकर खाद्य सुरक्षा एवं पर्यावरण सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।
- ❖ मुर्गी के विष्टा से भूमि उपजाऊ होती है।
- ❖ यह ग्रामीण परिवेश में पिछड़े लोगों को स्वरोजगार प्रदान करता है।

बैकयार्ड कुक्कुट की विशेषताएँ

- ❖ इनका प्लुमेज अर्थात पंख आकर्षक रंगीन होना चाहिए।
- ❖ इनमे प्रतिकूल परिस्थितियों में भी बढ़ने की क्षमता होनी चाहिए।
- ❖ मुर्गियों में ब्रुडीनेस नहीं होनी चाहिए।
- ❖ इनके अंडे तथा मांस का स्वाद, सुगंध, रंग एवं पोषक तत्व देशी मुर्गी के समान होना चाहिए।
- ❖ इनके मांस में वसा की मात्रा कम होनी चाहिए।
- ❖ इसमे बीमारी प्रतिरोधक क्षमता होनी चाहिए।
- ❖ इनका वजन आठ सप्ताह में कम से कम 1.25 किलोग्राम तथा फीड कन्वर्सन 2.2 होना चाहिए।
- ❖ मृत्यु दर आठ सप्ताह की उम्र तक 2 प्रतिशत से कम होनी चाहिए।
- ❖ अंडे की हैचेबिलिटी 80 प्रतिशत के आस पास होनी चाहिए।

बैकयार्ड कुक्कट प्रबंधनः

- ❖ बैकयार्ड मुर्गी पालन में पक्षियों को घर के पिछवाड़े में प्राकृतिक खाद्य आधार पर 10–20 मुर्गियों के झुण्ड में रखा जाता है।
- ❖ मुर्गियों को दिन के समय खुली जगह में छोड़ दिया जाता है जबकि रात में उन्हें बांस, लकड़ी या मिट्टी से बने आश्रय में रखा जाता है।
- ❖ मुर्गियों को घर के पिछवाड़े में खुली जगह में जाने से पहले प्रतिदिन स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाना चाहिए।
- ❖ चूजों को हमेशा साफ और ताजा पानी देना चाहिए। दिन में कम से कम 3 बार पानी बदल देना चाहिए। चूजों को फीडर और ड्रिंकर खोजने के लिए 2 मीटर से अधिक नहीं चलना चाहिए। पीने के पानी में इलेक्ट्रोलाइट्स और विटामिन के साथ एक हल्का एंटीबायोटिक भी देनी चाहिए।
- ❖ मुर्गियों को दिन में रसोई के बचे हुए अपशिष्ट, स्थानीय रूप से उपलब्ध अनाज, कीड़े–मकोड़े, कोमल पत्ते और उपलब्ध सभी सामग्री का उपयोग खाद्य पदार्थ के रूप में करना चाहिए, जिससे बैकयार्ड मुर्गीपालन में आहार पर काफी कम खर्च होता है।
- ❖ मुर्गियों को मौसम के आधार पर घर में उपलब्ध अनाज दाना भी दे सकते है।
- ❖ चूजे उत्पादन हेतु 10 मादा पक्षियों के लिए 1 नर पक्षी की आवश्यकता होती है। इसलिए अतिरिक्त नर को 12 से 15 सप्ताह की उम्र में जब उसका न्यूनतम शरीर भार 1200 ग्राम हो जाये तो उसे बेच देना चाहिए।

❖ बैकयार्ड मुर्गीपालन के लिए विकसित की गयी किस्मों में बेहतर रोग प्रतिरोधक क्षमता/प्रतिरक्षा क्षमता होती है। हालाँकि, इन पक्षियों को रानीखेत रोग और फाउल पॉक्स जैसी कुछ बीमारियों से सुरक्षा की आवश्यकता होती है।

❖ मुर्गियों को रानीखेत रोग से बचाव के लिये हर 6 महीने के अंतराल पर R2B स्ट्रेन का टीका लगाया जाना चाहिए। टीकाकरण से एक सप्ताह पहले मुर्गियों को कृमि नाशक दवाई देनी चहिये ।

❖ बैकयार्ड मुर्गीपालन में एक ही स्थान पर कई आयु समूहों के मुर्गियों का पालन–पोषण किया जाता है जिससे रोग नियंत्रण लगभग असंभव हो जाता है। इससे बचाव के लिए मेलाथियान(2–5%) या डी. डी.टी.(1–5%) प्रयोग मिट्टी में मिलाकर करना चाहिए।

❖ बैकयार्ड मुर्गियों में अन्तःपरजीवी के संक्रमण का भी काफी खतरा बना रहता है इससे बचाव के लिए एल्बेनडाजोल (5 मिली ग्राम/किलोग्राम शारीरिक भार) या पाइपराजीन (50–100 मिलीग्राम/पक्षी) पीने के पानी के साथ देनी चाहिए।

बैकयार्ड मुर्गीपालन के लिए उपयुक्त मुर्गियों की नस्लें

क्र.सं.	नस्ल	प्रकार	विकसित करने वाला संस्थान
1	वनराजा	अंडा एवं मांस	कुक्कुट शोध निदेशालय, हैदराबाद
2	कैरी देवेन्द्रा	अंडा एवं मांस	सी. ए. आर. आई., इज्जतनगर
3	कैरी गोल्ड	अंडा एवं मांस	सी. ए. आर. आई., इज्जतनगर
4	गिरिराजा	अंडा एवं मांस	K V A F S U, बंगलुरु
5	आर आई आर	अंडा एवं मांस	.....
6	ग्रामप्रिया	अंडा	कुक्कुट शोध निदेशालय, हैदराबाद
7	कैरी निर्भीक	अंडा	सी. ए. आर. आई., इज्जतनगर
8	कैरी श्यामा	अंडा	सी. ए. आर. आई., इज्जतनगर
9.	कड़कनाथ	अंडा एवं मांस	.....
10	असील	अंडा एवं मांस	.....

बैकयार्ड कुक्कुट मे टीकाकरण

बैकयार्ड कुक्कुट में निम्नलिखित बीमारियों का टीकाकरण करवाना चाहिए

क्र.सं.	बीमारी का नाम	उम्र (दिन मे)	डोज
1	मैरेक्स	1	0.20 मि. ली.
2	रानीखेत (लासोटा)	7	एक बूंद
3	गम्बोरो	14–18	–
4	रानीखेत (लासोटा)	28	एक बूंद
5	रानीखेत (आर टु बी)	70	0.50 मि. ली.

असील

कड़कनाथ

वनराजा

ग्रामप्रिया

बैकयार्ड मुर्गीपालन का महिला सशक्तिकरण व खाद्य सुरक्षा में भागीदारी:

- बैकयार्ड मुर्गीपालन ग्रामीण क्षेत्रो में महिलाओं एवं बच्चो के कुपोषण की समस्या से निजात दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्यूंकि मुर्गियों से मिलने वाले मांस एवं अंडो में पर्याप्त मात्रा में मिनरल एवं प्रोटीन होते है।
- यह महिलाओं में व्यवसायिकता के गुणों को विकसित करने में सहायक है।
- बैकयार्ड मुर्गीपालन महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में सहायक रहती है जिससे उनकी पुरुषो पर आर्थिक निर्भरता भी कम रहती है एवं उनके निर्णय लेने की क्षमता को भी प्रबलता मिलती है।
- अपशिष्ट पदार्थ (कीड़े, सफेद चींटियाँ, गिरे हुए दाने, हरी घास, रसोई का कचरा आदि) को कुशलतापूर्वक उपयोग कर मानव उपभोग के लिए अंडे और मांस में परिवर्तित किया जा सकता है।
- ग्रामीण/आदिवासी लोगों को रोजगार प्रदान करता है और शहरी क्षेत्रों में लोगों के पलायन को रोकने में मदद करता है।
- देशी नस्ल की मुर्गियों का मांस एवं अंडे भी ज्यादा कीमत में बिकते है।

तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभार

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग
कुलपति
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
निदेशक
प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

डॉ. जे. पी. मिश्रा
निदेशक
भा.कृ.अनु.प.-कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जोन-2, जोधपुर

सम्पर्क सूत्र

डॉ. सुरेश चंद कांटवा
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केन्द्र, हनुमानगढ़-II (नोहर)
7697192001

मुद्रक : जवाहर प्रेस, बीकानेर # 9784911114